

---

shrImajjagadgurushrIrohiNIprapannAchAryaprapattiH

श्रीमज्जगद्गुरुश्रीरोहिणीप्रपन्नाचार्यप्रपत्तिः

Document Information

---

Text title : rohiNIprapannAchAryaprapattiH

File name : rohiNIprapannAchAryaprapattiH.itx

Category : deities\_misc, gurudev, rAmAnujasampradAya, prapatti

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : PSA Easwaran psawaswaran at gmail.com

Acknowledge-Permission: Shri Tripursundari Ved Gurukulam, Sahibabad (Ghaziabad), UP

Latest update : March 24, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 30, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

## श्रीमज्जगद्गुरुश्रीरोहिणीप्रपन्नाचार्यप्रपत्तिः



श्रीकाश्यपे गोत्रकुलारविन्दं  
जगन्नाथपादेषु सदानुरक्तम् ।  
रामदेशिके कार्यसदाभिलाषी  
श्रीरोहिणीपादं समाश्रयामि ॥ १ ॥

नीराजने भगवतः कृतकार्यभारं  
श्रीजानकीनाथपदाम्बुजस्य ।  
सत्कारसम्यक्कृतं तिथिना तदीयं  
श्रीरोहिणीप्रपन्नवरदेशिकमाश्रयामि ॥ २ ॥

नित्यं प्रसन्नमनसा मनसां मुनीनां  
सम्मोहनार्थधृतचारुचरित्रगात्रम् ।  
सर्वान् सुसज्जितगुणान् गुरुपादपीठे  
श्रीरोहिणीप्रपन्नवरदेशिकमाश्रयामि ॥ ३ ॥

श्रीरामदेशिककृतबहुधर्ममूलं  
संवर्धनाय बहुमेव कृतं प्रयासम् ।  
सञ्चालनाय पाठकानपि पाठयन्तं  
रोहिणीप्रपन्नवरदेशिकमाश्रयामि ॥ ४ ॥

दीनेऽनाथवपुषे चक्षुधार्ति हेतो  
भिक्षावनेन भ्रमणेन च शिष्यगेहे ।  
निर्हेतुकेन करुणातिथिपूजयन्तं  
रोहिणीप्रपन्नवरदेशिकमाश्रयामि ॥ ५ ॥

आचार्यवृत्तिविकसनसुयशोमयूरवैः  
विद्धतविचक्षणविलक्षणभावपूर्णम् ।  
स्वामिन् कृतकृत्य कितये जगदाश्रयन्तं  
रोहिणीप्रपन्नवरदेशिकमाश्रयामि ॥ ६ ॥

रोहिणीप्रपन्नमुखमण्डलदर्शनेन  
संसारतारकदयाद्रि दृगञ्चचलेन  
श्रीवैष्णवैः सततसेव्यपदाम्बुजेन  
रोहिणीप्रपन्नवरदेशिकमाश्रयामि ॥ ७ ॥

वेदान्तदेशिकजयध्वजदण्डहस्ते  
श्रीवैष्णवैस्सहयामुनदिव्यघोषैः ।  
देशेषु भक्तिविमुखान् हरिपादपद्मे  
रोहिणीप्रपन्नवरदेशिकमाश्रयामि ॥ ८ ॥

वैदेहीसंस्थापित वामभागे  
श्रीरामसव्ये सहलक्षणेन ।  
यतीन्द्रपरकाल श्रीदेशिकाय  
तं पूजितं रोहिणी मताश्रयामि ॥ ९ ॥

रामानुजाचार्य अहोविलाद्यै वालमुकुन्देन सुपूजितेन  
स्वमिन्धनश्याम विराजयन्तं पूजितं रोहिणी मताश्रयामि ॥ १० ॥

वेदान्तनारायणयोगिवर्यमठप्रधानै पुरुषोत्तमधेयोपूजितं  
देशिकरामपूर्वं ते पूजितरोहिणिमाश्रयामि ॥ ११ ॥

श्रीचित्रकूटे गिरियोगपीठे वेदान्तगुरुपीठ अलङ्कृतेन  
परमार्थमूर्धन्यविभूषितेन जगद्गुरोः घोषसुमति तेन ।  
ये मानवाः पठन्ति भक्तिसमादरेण भागवतकृतेन प्रपत्तिमूलम्,  
संसारसागरविमुक्तविकुण्ठभागी  
गुरुपादसेवनरतिं च भवं तरन्ति ॥ १२ ॥

॥ वत्सगोत्रसमुद्भूतभागवताचार्यस्वामिनाभराम-  
देशिकमुदेकार्षिर्शिद्वैष्णव हेतवे ॥


इति श्रीजगद्गुरु श्रीरोहिणीप्रपन्नाचार्य प्रपत्तिः ॥

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*shrImajjagadgurushrIrohiNIprapannAchAryaprapattiH*

pdf was typeset on August 30, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

